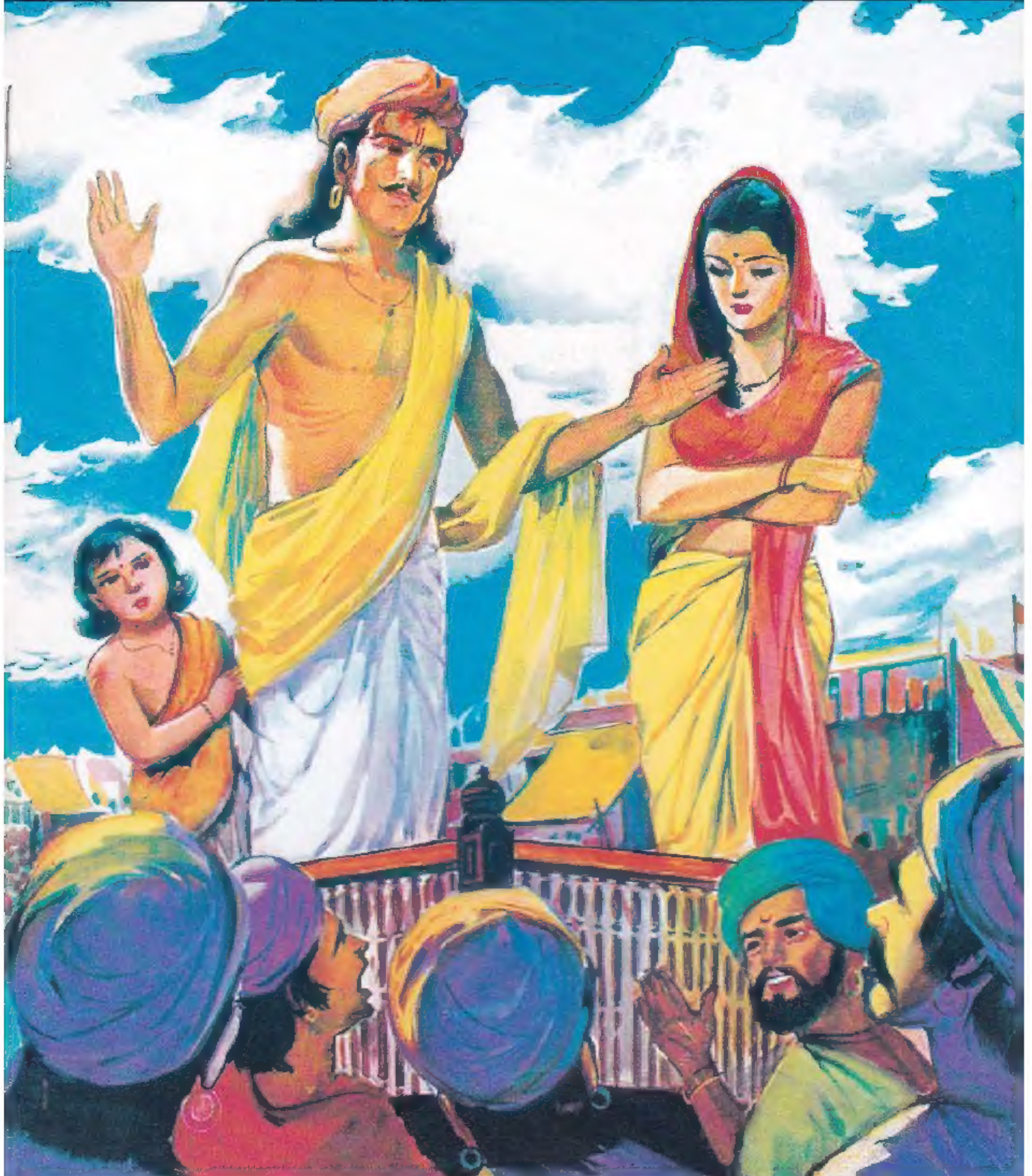




हरिश्चन्द्र

संख्या ५७७

₹९०





तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके - अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज़्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी ९ करोड़ से ज़्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं - भारतभर में १०००+ पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : www.ack-media.com. अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर www.amarchitrakatha.com से खरीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को पांच वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य तथा धार्मिक कथाएं

महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय साहित्य

भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

लोक कथाएं तथा हास्य कथाएं

सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

शूरवीर

वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

दूरदृष्टा

विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

समकालीन साहित्य

भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ट कहानियाँ

कथा	चित्र	संपादक	मुखपृष्ठ
कमला चन्द्रकांत	सोरेन राय	अनंत पै	प्रताप मुलिक

Amar Chitra Katha Pvt Ltd

© Amar Chitra Katha Pvt Ltd, 1971, Reprinted June 2022,
ISBN 978-81-8482-271-7

Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor, Dhansak Plaza,
Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri (East), Mumbai - 400059, India.
For Consumer Complaints Contact Tel : + 91-2249186881/2

Email: customerservice@ack-media.com

Printed in India

This book is sold subject to the condition that the publication may not be reproduced, stored in a retrieval system (including but not limited to computers, disks, external drives, electronic or digital devices, e-readers, websites) or transmitted in any form or by any means (including but not limited to photocopying, photocopying, docutech or other reprographic reproductions, mechanical, recording, electronic, digital versions) without the prior written permission of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition being imposed on the subsequent purchaser.

हरिश्चन्द्र

त्रेतायुग में अयोध्या में राजा हरिश्चन्द्र राज करते थे। वे बड़े धर्मात्मा थे। सारी प्रजा उन्हें चाहती थी और उनका मान करती थी। एक दिन वे शिकार के लिए जंगल में गये। वहाँ उन्हें किसी की पुकार सुनायी दी—

बचाओ!

बचाओ!

राजा ने समझा, किसी अबला पर आपत्ति आयी है। वे तुरन्त उधर चले जिधर से पुकार आ रही थी। उन्होंने देखा कि एक खुले स्थान पर एक मुनि समाधि लगाये बैठे हैं।



यह मैंने क्या किया? ये तो मुनि विश्वामित्र हैं! अब मैं क्या करूँ?

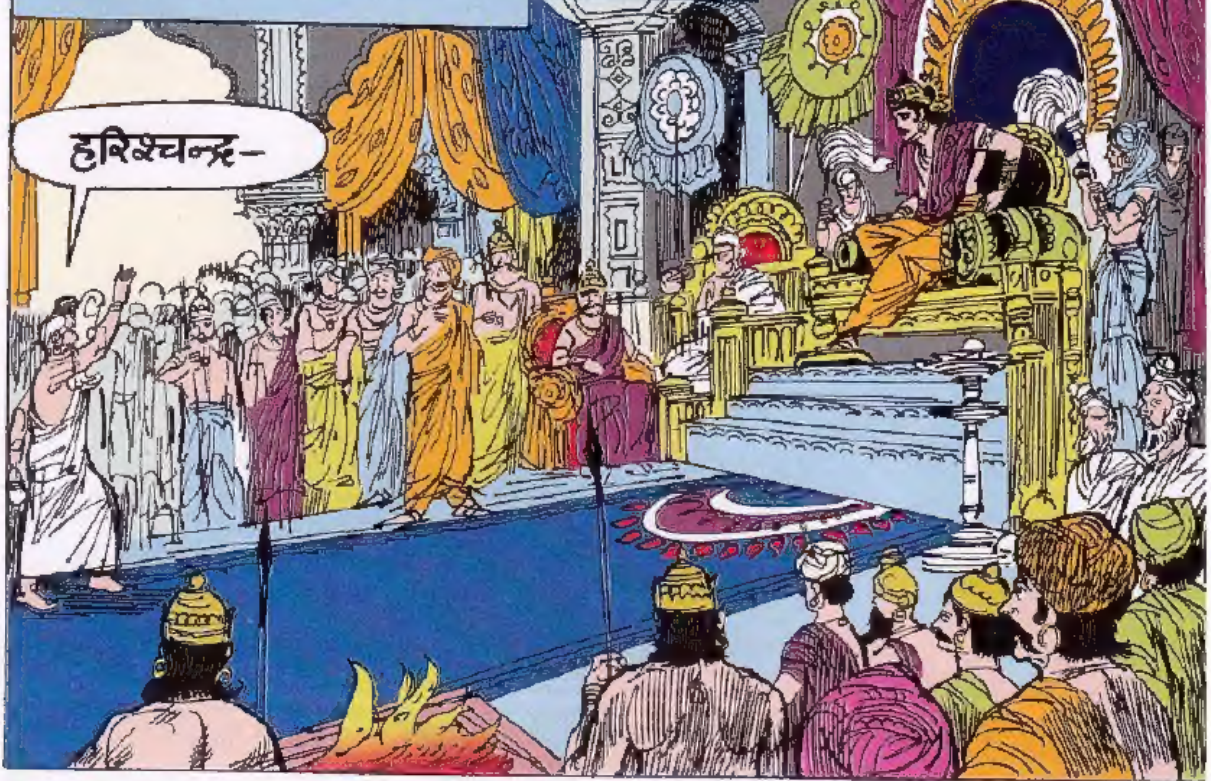


मुनिवर, मुझे बहुत खेद है कि मैंने आपका ध्यान भंग कर दिया। मैंने किसी की पुकार सुनी थी!

वह उन विद्वानों की आत्मा की पुकार थी जिन्हें मैं अपने वश में कर रहा था!



कुछ दिन बाद... राजा हरिश्चन्द्र सिंहासन पर बैठे थे...
अचानक एक तेज़ आवाज़ सुनायी दी...



विश्वामित्र की आवाज़ राजा घबरा उठे।



सारे मंत्री स्तब्ध रह गये! राजा मुनिवर को अन्दर ले गये।



मैं अपना राज्य आपकी देता हूँ।

मंत्रियों ने राज्य दान करने वाले राजा को बलकाया।



महाराज, आप इस प्रकार राजपाट कैसे त्याग सकते हैं?

मैंने अपना वचन मंग किया तो प्रजा पर आपत्ति आ जायेगी।

राजपाट छोड़ कर राजा, महारानी शैलया तथा राजकुमार रोहितारक्ष के साथ नगर से चल दिये। तीनों को जी-जान से चाहने वाले नगरवासी उन्हें जाते देख रहे लगे।



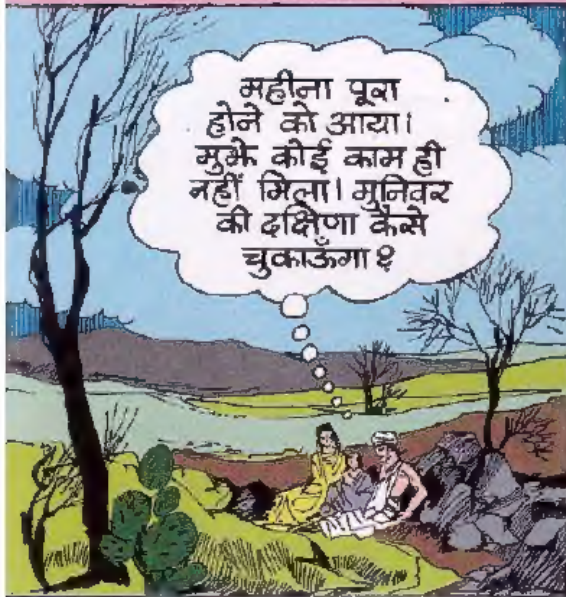
कुछ दूर चलने के बाद, हरिश्चन्द्र की किसी की आवाज़ सुनायी दी। उन्होंने घूम कर देखा। मुनि विश्वामित्र चले आ रहे थे।



दान के साथ दक्षिणा भी दी जाती है। राजा हरिश्चन्द्र तो अपना सब-कुछ दान कर चुके थे— दक्षिणा देने की उनके पास कुछ नहीं बचा था!



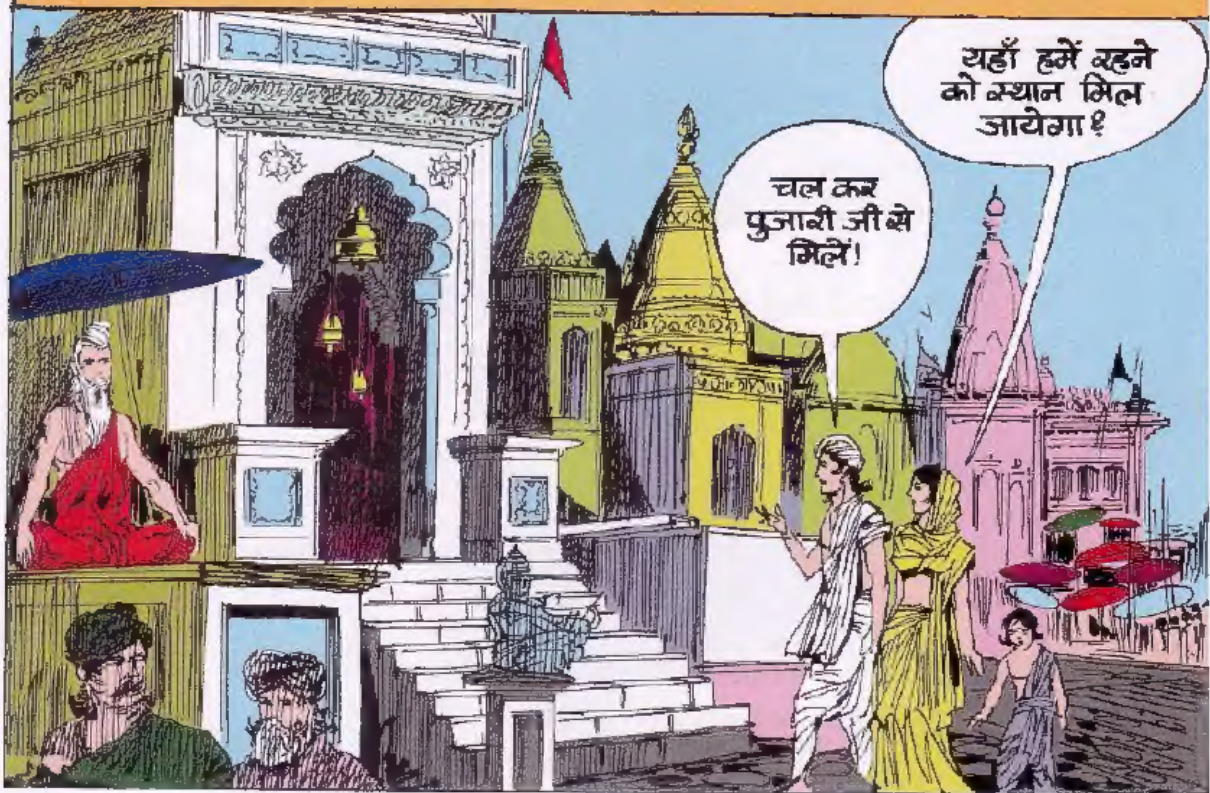
राजा, रानी और राजकुमार रोहिताश्व
देश-देश में जंगल और बेगिस्तान
की बराब घानते हुए बहुत दूर
चले गये—



घूमते-घूमते वे मन्दिरों के नगर,
वाराणसी पहुँचे।



गंगा के किनारे वाराणसी के मध्य मन्दिर दिखायी देने लगे। शके-हारे राजा अपने परिवार सहित एक मन्दिर में गये।



एक दिन तीनों सड़क पर मीड़ में चले जा
रहे थे कि हरिश्चन्द्र को एक
जाना-पहचाना स्वर सुनायी दिया—

हरिश्चन्द्र—



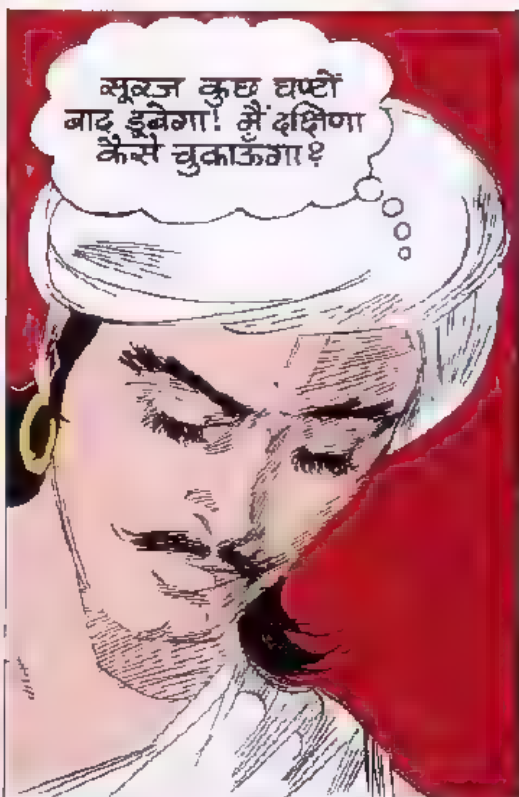
एक महीना आज
पूरा हो रहा है!

जानता हूँ,
परन्तु---



सूरज कुछ घण्टों
बाद डूबेगा! मैं दक्षिणा
कैसे चुकाऊँगा?

...दिन अभी पूरा
नहीं हुआ!
बन्ध्या पूरी होने
तक ठहरिये।



राजकुमार रोहिताश्व बहुत माहसी था। दर-दर भटकने के कष्टों को उसने अपने माता-पिता के साथ हँसते-हँसते भेला था, परन्तु उस कीमल शरीर में और बहने की शक्ति नहीं रही थी!



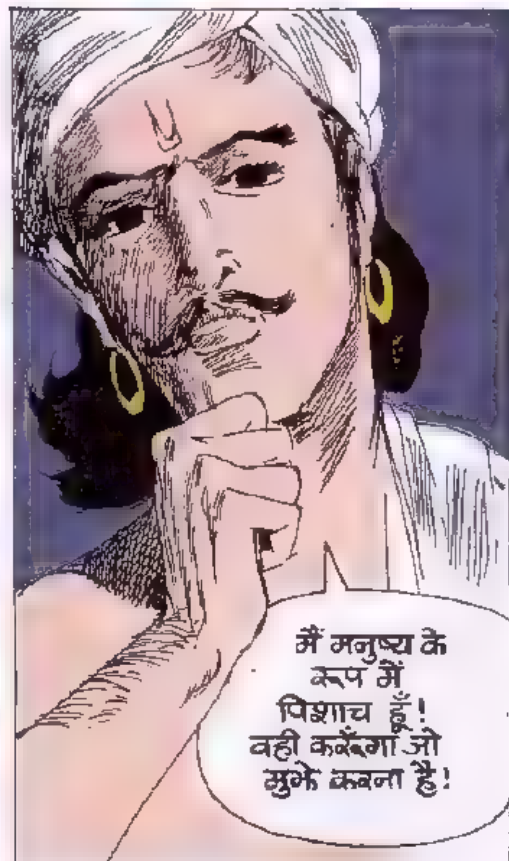
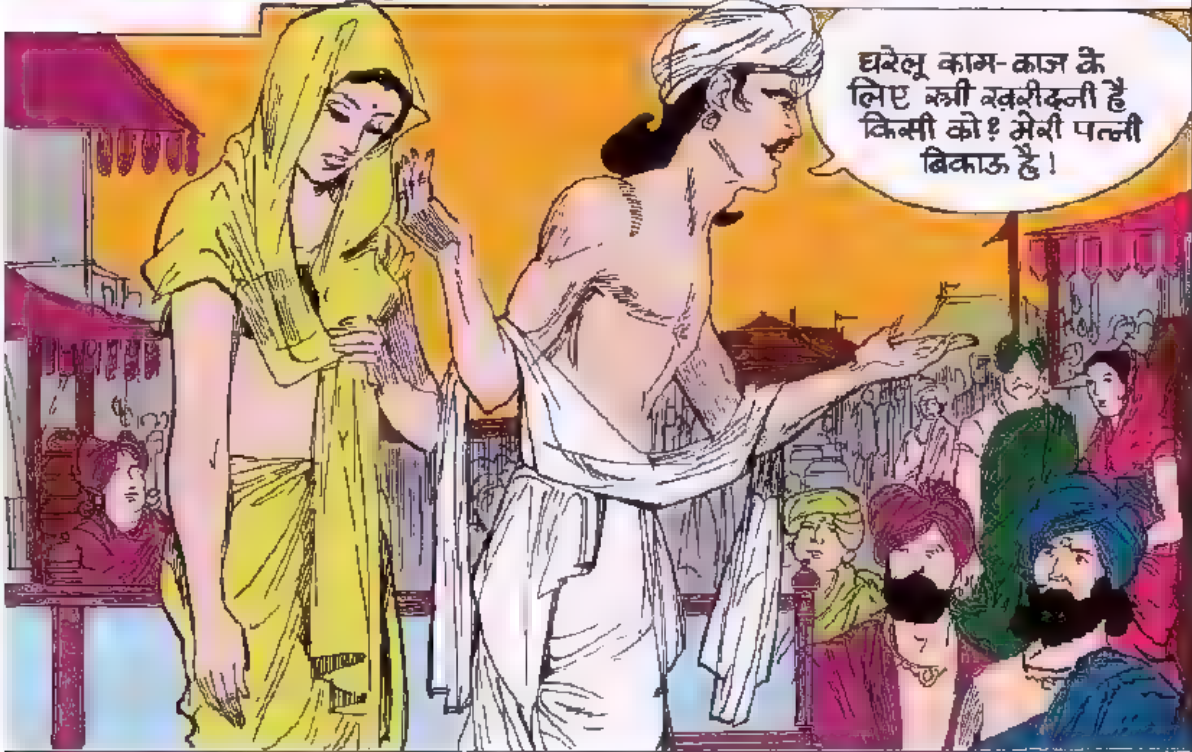
कुछ घंटों के बाद राजा हरिश्चन्द्र लौटे। उन्हें काम नहीं मिला था।

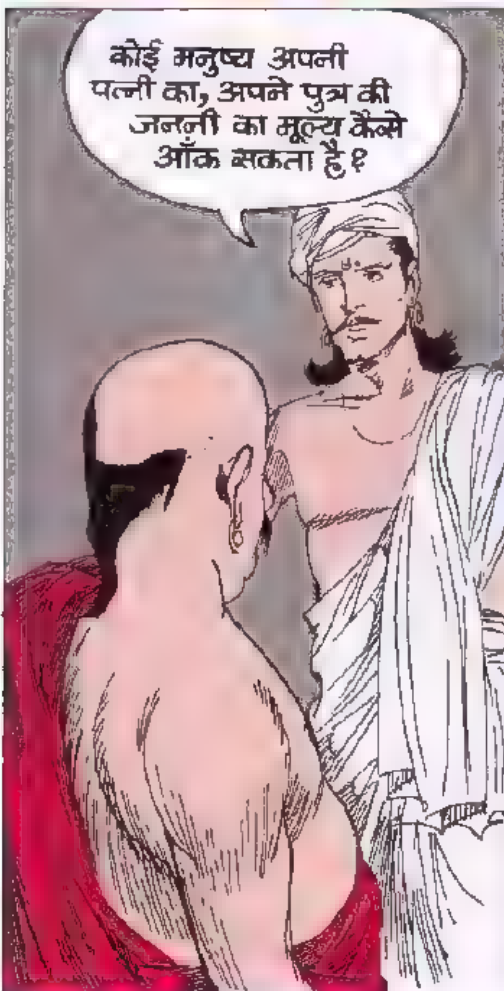


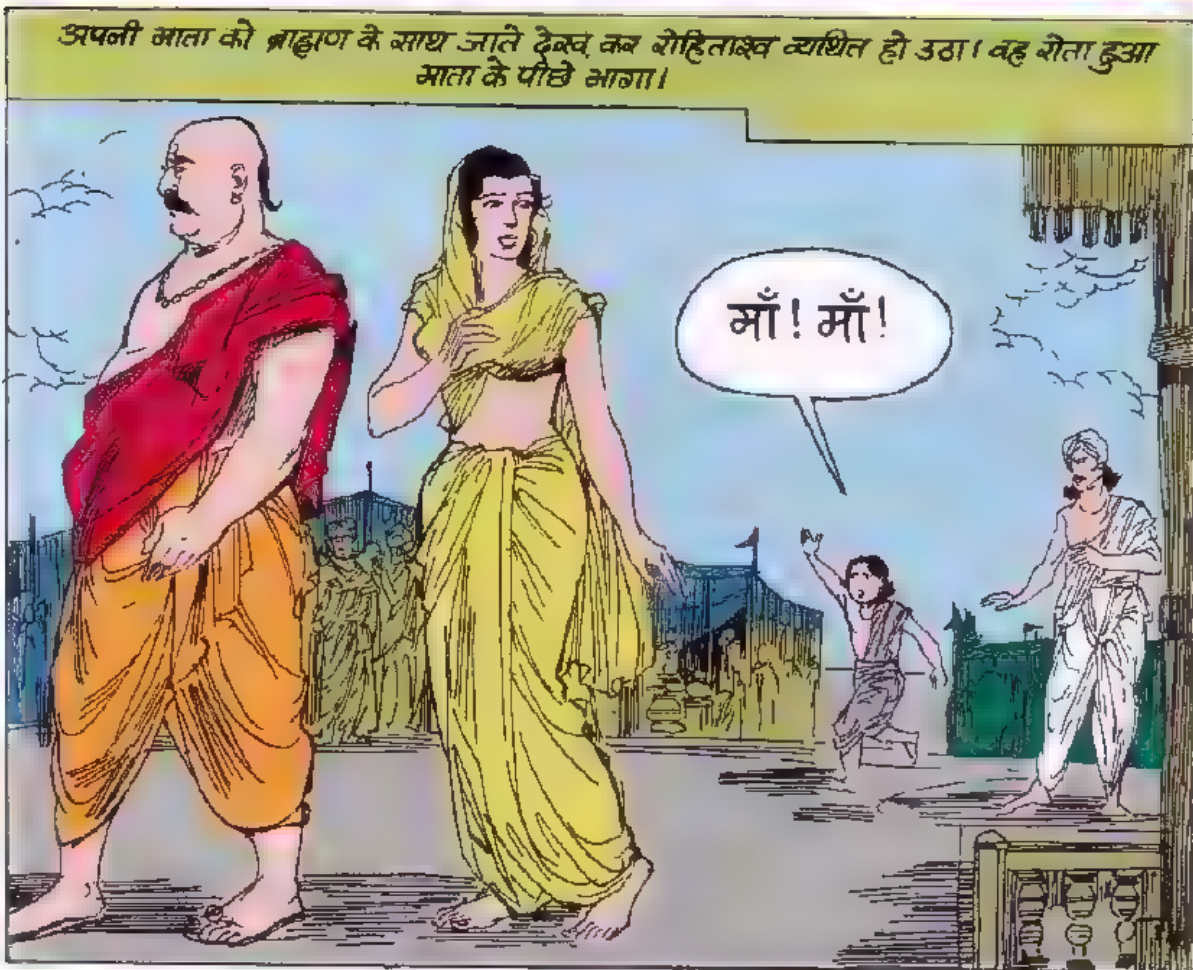
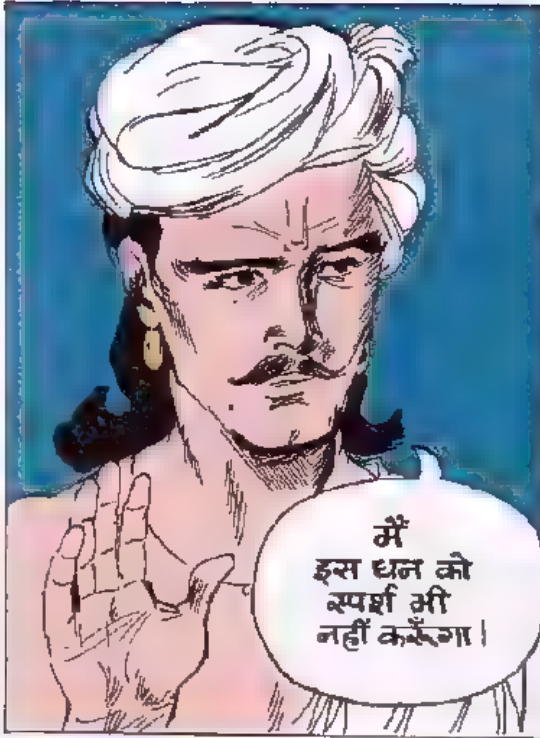


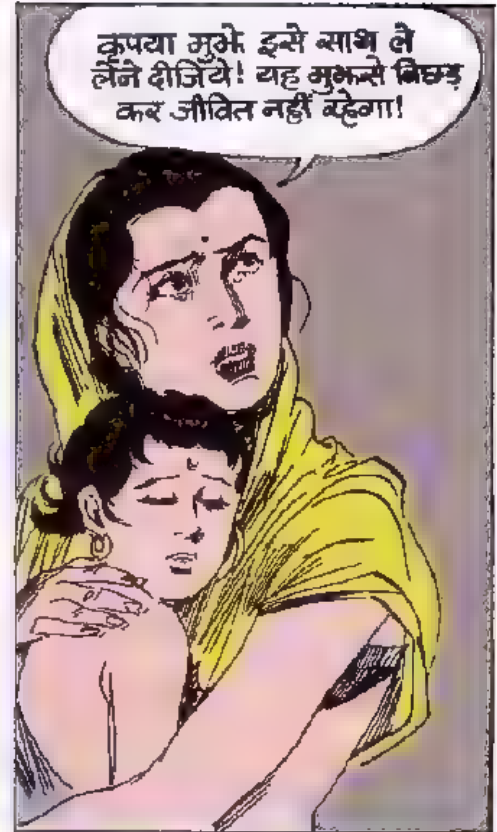


हरिश्चन्द्र जन मार कर बाज़ार गये। वे नीलाम के चबूतरे पर जा खड़े हुए।
बहुतसे लोग वहाँ जमा हो गये।









ब्राह्मण हरिश्चन्द्र की पत्नी और पुत्र को खरीद कर ले जा रहा था और वे हाँचाव खड़े देख रहे थे!





हरिश्चन्द्र फिर बाजार में आये और नीलामी के चबूतरे पर जा बबड़े हुए। इस बार वे अकेले थे!



लोगों ने उन्हें पहचान लिया। कुछ हँस भी दिये!

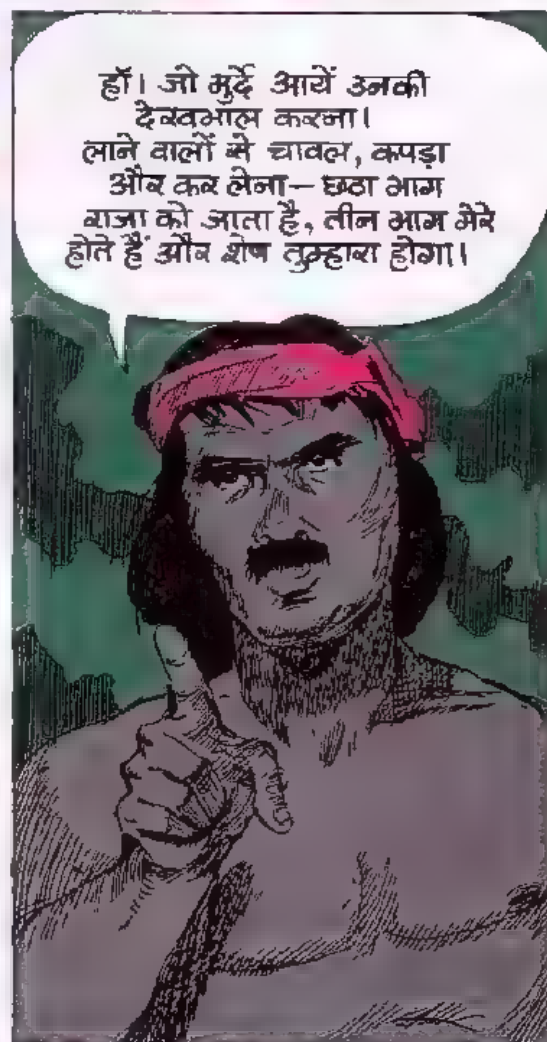
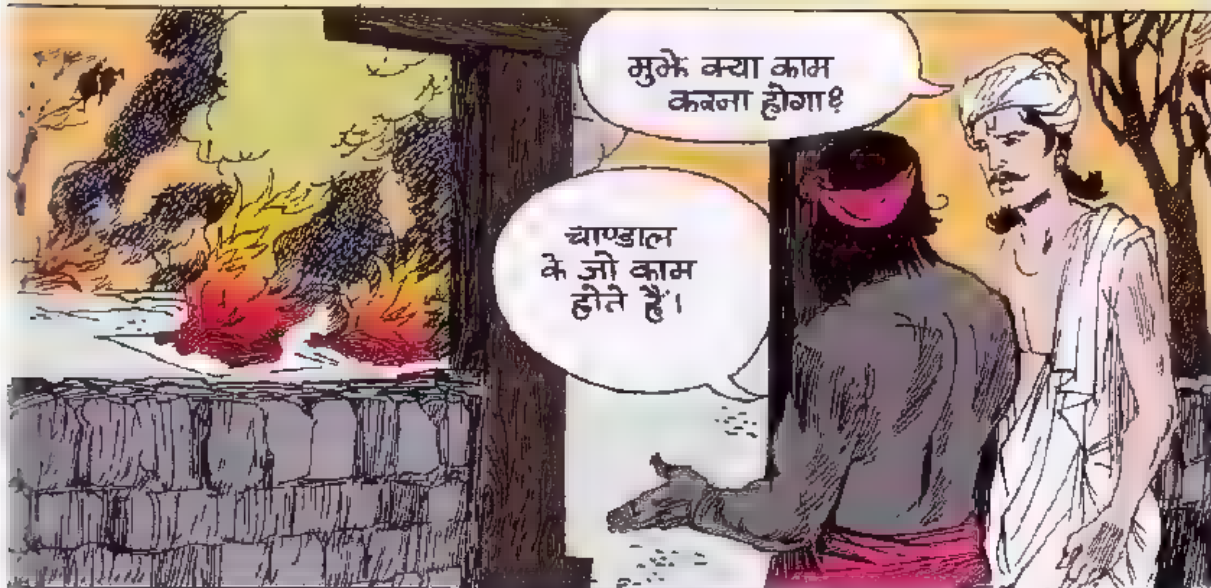


कोई उन्हें खरीदने को तैयार नथा। स्मशान का रखवाला चाण्डाल यह सब देख रहा था।





विश्वामित्र को दक्षिणा दे कर हरिश्चन्द्र अपनी नये स्वामी के साथ चले गये...





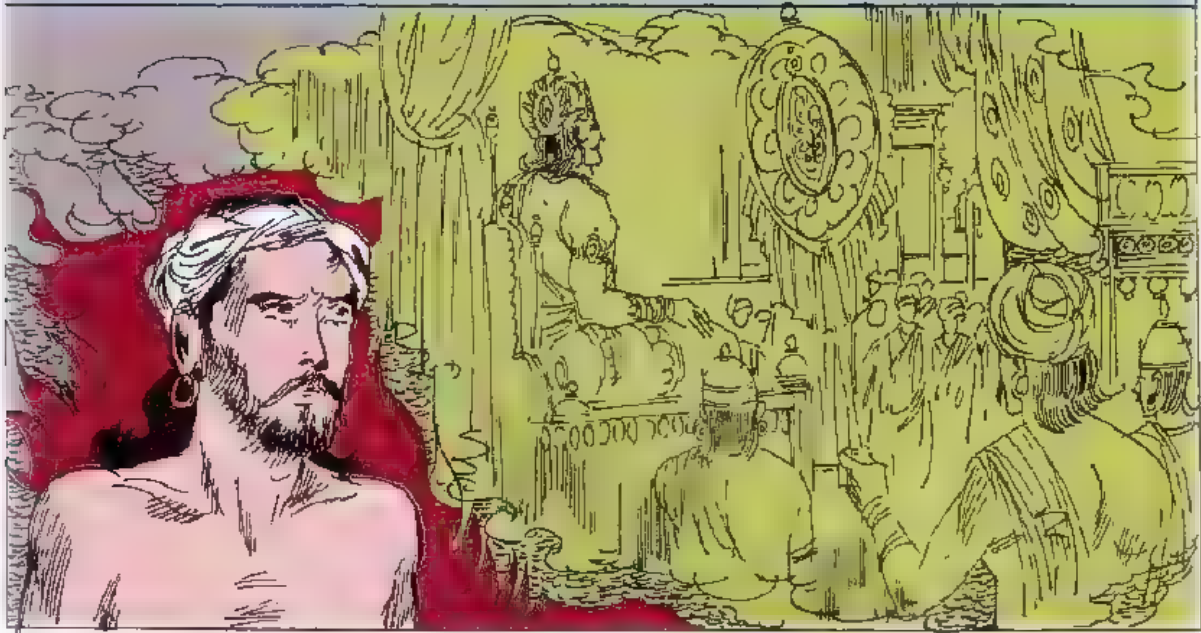
भावों का कर कसूल करने और उनका अविग्रह देखने में हरिश्चन्द्र के दिन बीतने लगे!



इस स्थान और आग की लपटों के प्रभाव से उनकी आकृति ही बदल गयी। अब कोई उन्हें पहचान भी नहीं सकता था।



दिन बीत रहे थे—राजा अपना काम कर रहे थे। स्वर्णशाल में शव जलते थे—जमी और धुँएँ से उनकी आँखों में पानी आ जाता था—कभी कभी बीते दिनों की याद आ जाती थी।



सोते समय, गठ में बिस्तर पर सोते हुए पुत्र की याद आती। बीते दिन नजाने कहाँ छूट गये थे।



उधर रानी दिन-रात ब्राह्मण के घर काम में जुटी रहती थीं।





उनकी आँखों से आँसू बहने लगे।
बेटे का शव ले कर घर में आयीं
और लह्मण को जगाया।

मेरा पुत्र मर गया
है! इसके
क्रिया-कर्म के लिए
कुछ पैसा दीजिये!

पैसा? तुम्हें दो जून
रोटी देते हैं
यह क्या
कम है?

रानी ने एक शब्द भी नहीं कहा और शव
को ले कर नगर की सुनसान सड़क पर चल पड़ीं।



स्मशान के द्वार पर दाढ़ी-वाले चाण्डाल ने
उन्हें रोका।

क्या
चाहिए?



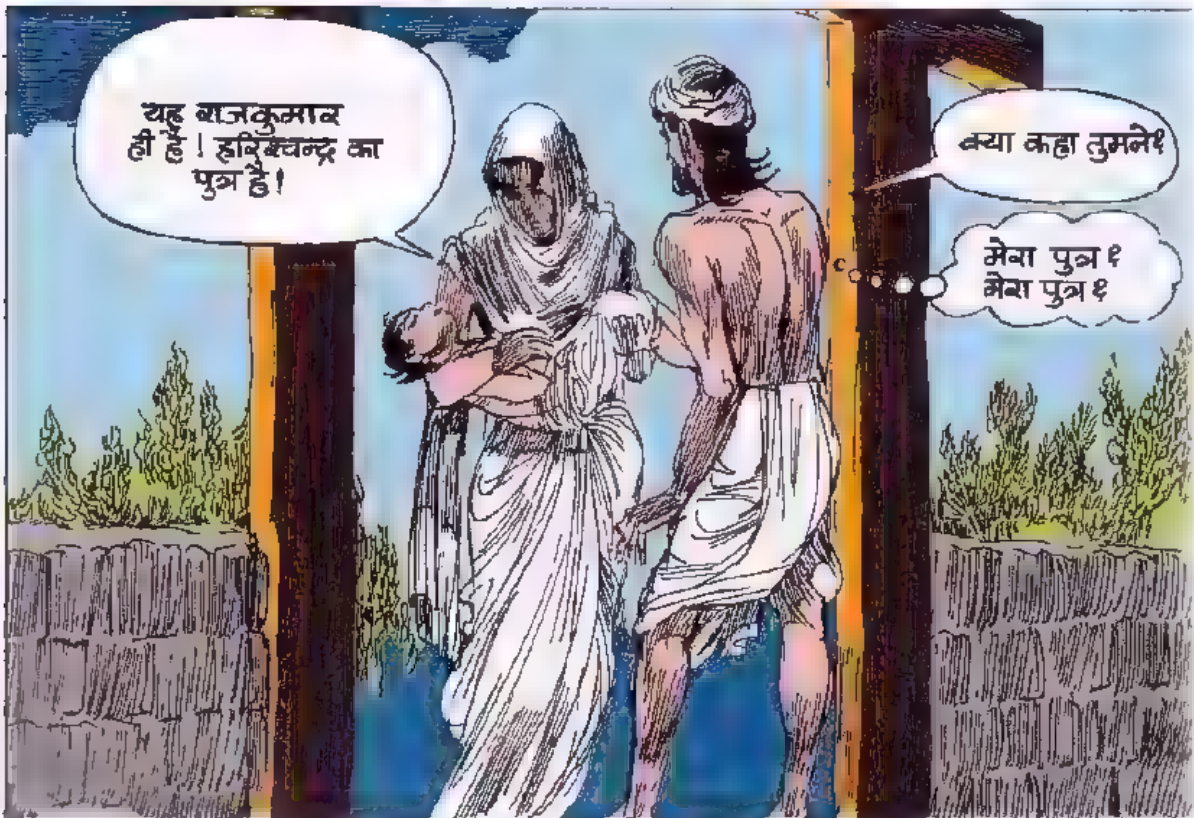
घूँघट से ढँका स्त्री का चेहरा हरिश्चन्द्र की
दिखायी नहीं दिया।

तुम चावल और कर का
पैसा लायी हो?

नहीं!



तभी हरिश्चन्द्र की दृष्टि शव के मुख पर पड़ी—

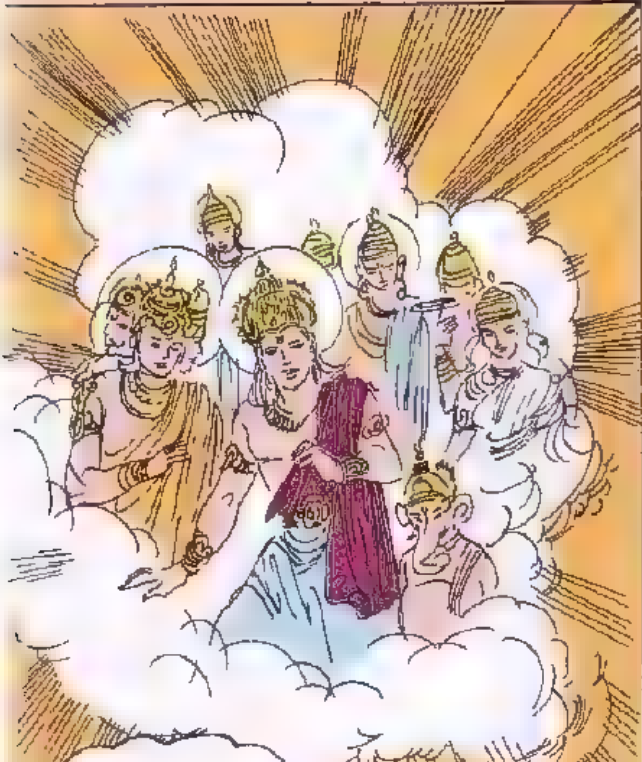


दीर्घा यह स्वर सुन चौंक पड़ी! स्वर पहचाना हुआ था! उन्होंने दाढ़ी-वाले मुखमाये
वेहरे की ध्यान से देखा।





चाण्डाल के उत्तर देने से पहले ही वहाँ
एक दिव्य घटना घटी। देवता
लोग स्वर्ग से उतर आये थे!



मात क्या
है?



देवताओं के राजा, इन्द्र आगे आये...



हरिश्चन्द्र,
हम सत्य के प्रति
तुम्हारी निष्ठा की
परीक्षा ले रहे थे!
तुम उसमें सफल
रहे!

देवराज, यह कैसी
परीक्षा कि मेरा
अकेला पुत्र
चल बसा...



इन्द्र मुस्कुरा दिये...

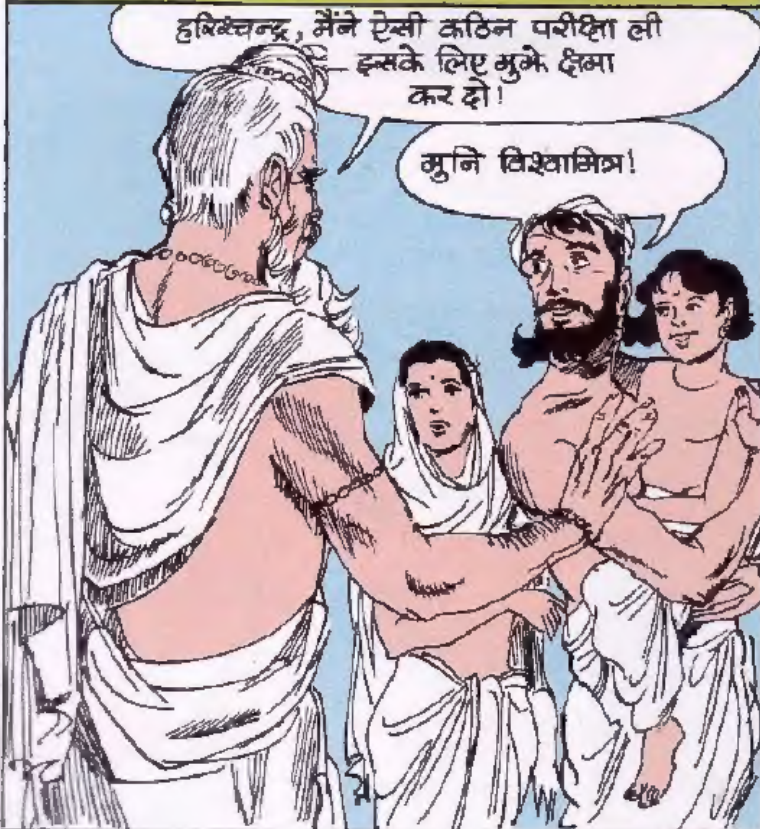
इन्द्र की मुस्कुराता देव कमल हरिश्चन्द्र ने उधर देखा जिधर उनके पुत्र का शिव रखा था... वे चकित हो गये... रोहिताश्व खड़ा मुस्कुरा रहा था!



तभी किसी ने उन्हें पुकारा—

हरिश्चन्द्र, मैंने ऐसी कठिन परीक्षा ली
— इसके लिए मुझे क्षमा
कर दो!

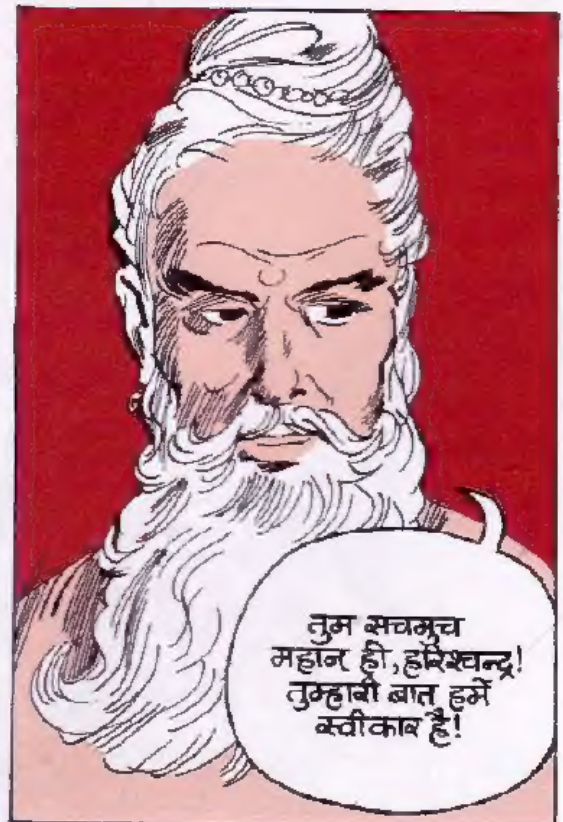
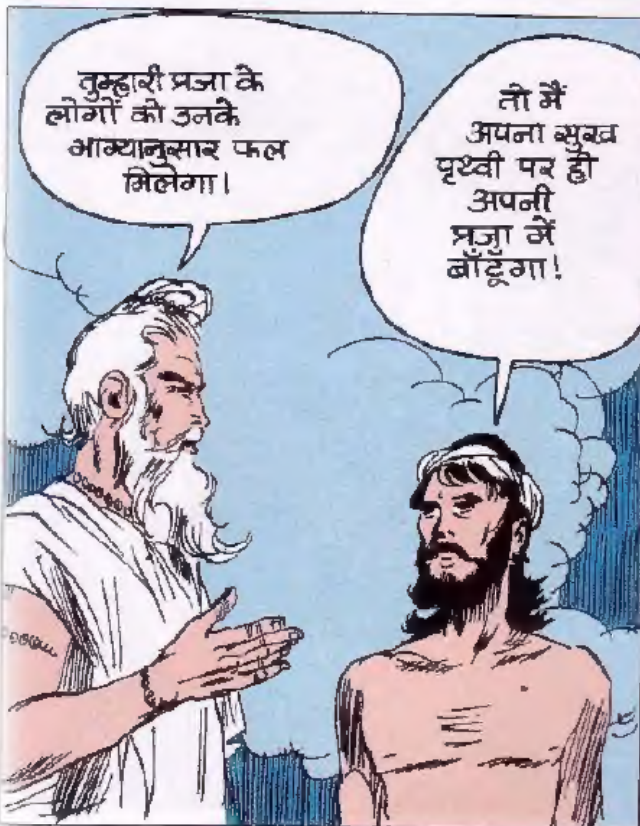
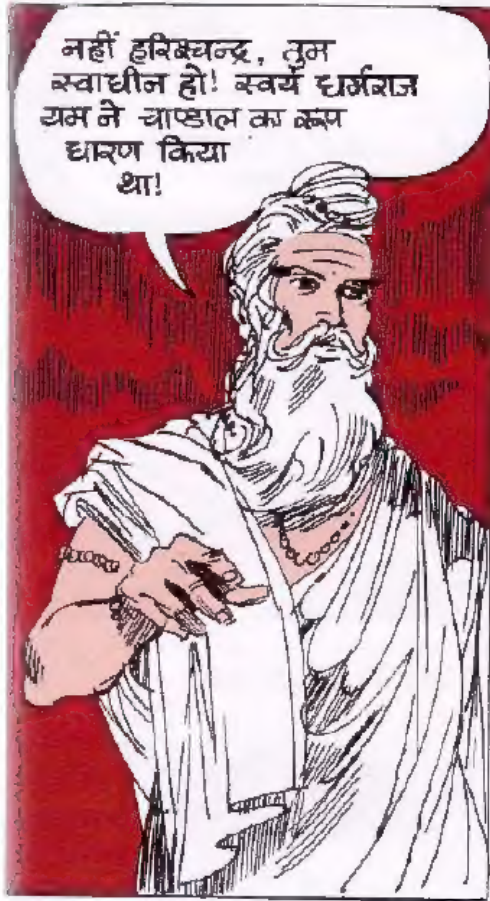
मुनि विश्वामित्र!



मैं तुम्हें
वापस अयोध्या
ले जाने आया
हूँ!

मैं नहीं
चल सकता!
मैं तो चाण्डाल के
हाथों बिक चुका
हूँ!

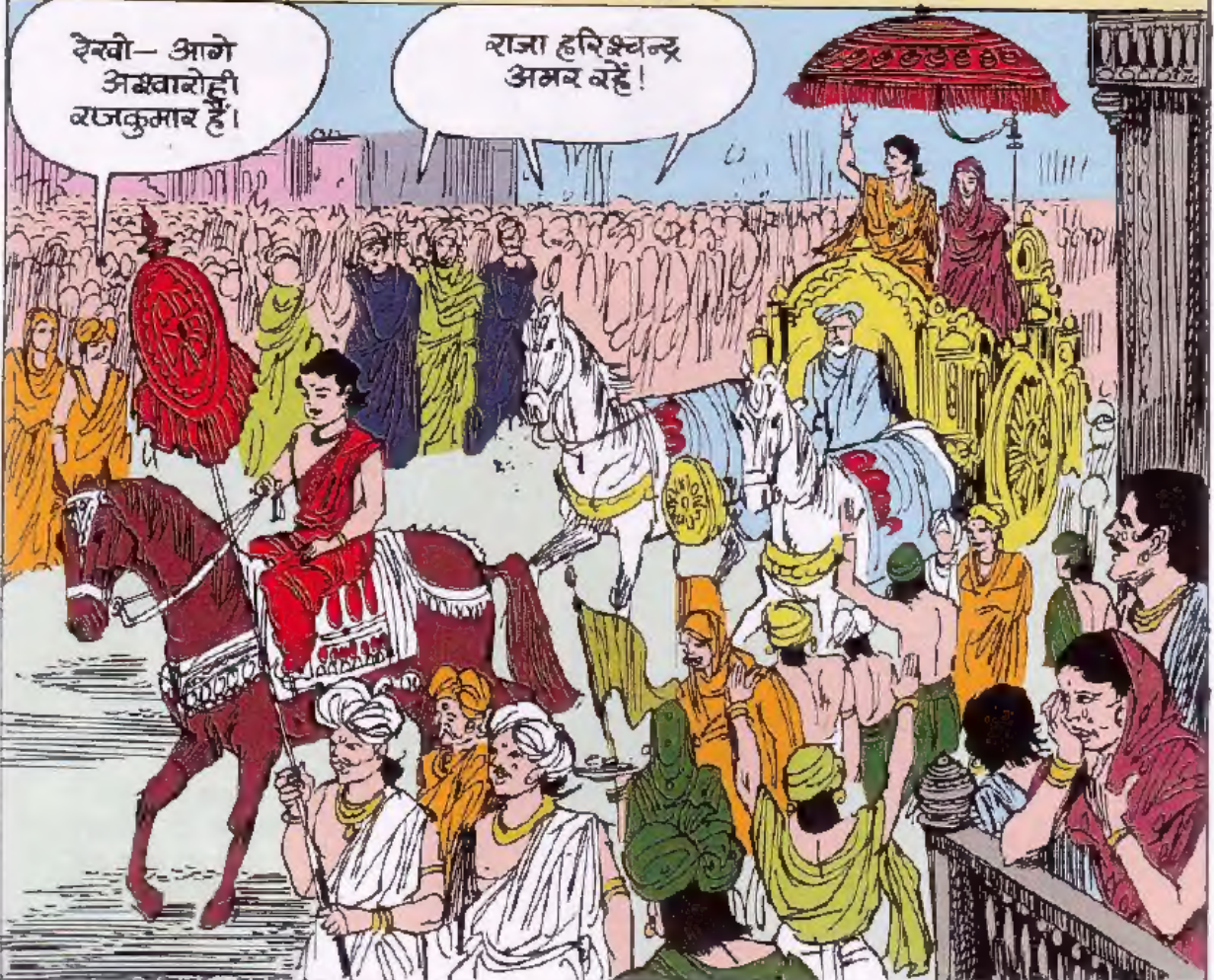




अयोध्या में समाचार फैल गया कि राजा वापस आ रहे हैं। लोग उनका स्वागत करने के लिए घरों से निकल पड़े...



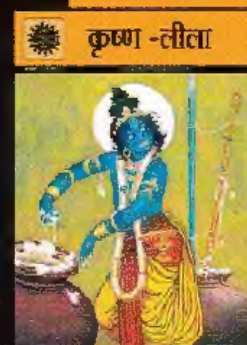
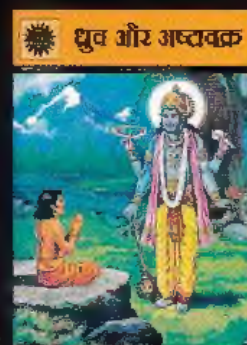
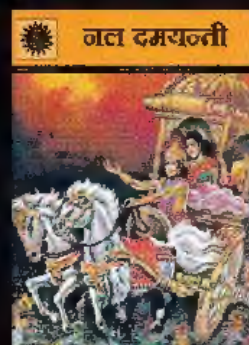
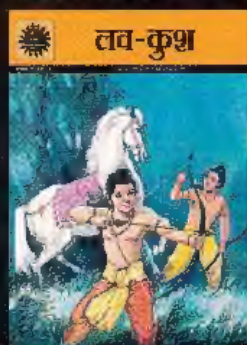
प्रजा सड़क पर उमड़ पड़ी! बहुत से लोग प्रसन्नता के मारे रो रहे थे! उनके बिछड़े हुए प्यारे राजा वापस आ रहे थे।



हरिश्चन्द्र

इस अति सम्माननीय राजा से देवता भी प्रभावित थे। भाग्य ने उनसे उनका राज्य, वैभव, पत्नी और पुत्र सब कुछ छीन लिया था। विपत्तियों की झड़ी लगी रही फिर भी हरिश्चन्द्र ने सत्य का मार्ग नहीं त्यागा। एक महान राजा का परिचय देते हुए उन्होंने दृढ़ निश्चय के साथ अपनी और अपने परिवार के सम्मान की रक्षा की।

अमर चित्र कथा के अन्य महाकाव्य (वीर गाथाएँ) और पौराणिक कथाएँ :



ये भी पढ़ें :



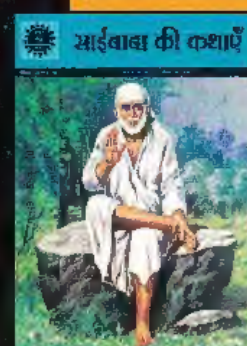
वीरांगना



भारतीय उत्कृष्ट साहित्य



हास-परिहास और दंतकथाएँ



दिव्यदृष्टि

Buy online at www.amarchitrakatha.com

ISBN 978-81-8482-277-7



9 788184 822777